अकबर एक राष्ट्रीय सम्राट के रूप में

डॉ० सारिका अवस्थी

प्रवक्ता

इतिहास विभाग

एस०एन० सेन बा०वि० पी०जी० कॉलेज, कानपुर

ईमेलः

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० सारिका अवस्थी

अकबर एक राष्ट्रीय सम्राट के रूप में

RJPP Dec.22,
Vol. XX, Special Issue

pp.91-95
Article No. 15

Online available at *:*
https://anubooks.com/journal/rjpp

DOI:
http://doi.org/10.31995/rjpp.2022v20iS.15

अकबर विश्व के महान सम्राटों में से एक है उसकी दूरदर्शिता तथा विवेकपूर्ण नीतियों की सभी इतिहासकारों मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। अकबर ने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा कला के क्षेत्र में भी सामजस्य और समन्वय की नीति अपनाई। अकबर को राष्ट्रीय सम्राट कहा जाता है। "राष्ट्रीय सम्राट" शब्द उस शासक के लिए प्रयोग किया जाता है जिसने जन समूह में प्रत्येक क्षेत्र में एकता उत्पन्न कर उन्हें एक सूत्र में पिरो दिया। अकबर जिस समय सम्राट बना था उसके राज्य में विभिन्न जातियों, धर्मो व संप्रदायों के लोग रहते थे जिसमें किसी भी प्रकार की एकता ना थी, प्रत्येक संप्रदाय एक–दूसरे से घृणा करते थे उनमें एकरूपता लाना अति आवश्यक था। अकबर का भारत की एकता, उसकी उन्नति और उसके सभी निवासियों की समान प्रगति तथा सुविधाएं था, इस दृष्टि से सभी इतिहासकार उसे राष्ट्रीय सम्राट स्वीकार करते हैं उसमें सम्पूर्ण भारत को एक शासक के अधीनता में लाने का प्रयास किया तथा साथ ही एक शासक व एक साम्राज्य के संस्थापक की दृष्टि से कार्य किये। निम्न आधारों पर उसे एक राष्ट्रीय सम्राट की संज्ञा देते हैं–

राजनैतिक एकता

अकबर ने भारत में राजनैतिक एकता स्थापित करते हुए साम्राज्यवादी नीति का पालन किया। राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिए राजनैतिक एकता स्थापित करना आवश्यक था। उसने विजय मात्र से ही संतोष नहीं किया बल्कि एक स्वरूप एवं सुदृण शासन स्थापित किया। अकबर का प्रान्तीय शासन, अर्थ–व्यवस्था, लगान– व्यवस्था, कर–प्रणाली आदि सम्पूर्ण साम्राज्य में समान थी। उसकी शासन प्रणाली ऐसी थी कि उसके सभी नागरिक अपने को एक राज्य का नागरिक मान सकते थे और राज्य से समान सुविधाओ व सुरक्षा की आशा कर सकते थे। अकबर के इस शासन नीति से राज्य को एकता व शक्ति प्राप्त हुई। वह अपनी प्रजाति का प्रथम पुरुश था जो भारत की एकता के स्वपन से अभिभूत था ,उसके अखण्ड भारत में प्रत्येक मुसलमान, ब्राहमण, जैन, ईसाई तथा पारसी कंधे से कंधा मिलाकर कानून की दृष्टि से बराबरी के आधार पर रह सकते थे।

प्रशासनिक एकता

अकबर की प्रशासनिक एकता जन कल्याण से प्रेरित थी। इसमें बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिको को समान अधिकार व संरक्षण प्राप्त था। सभी प्रान्तो, सरकारों तथा परगनों में एक समान प्रशासन तंत्र था। सम्पूर्ण प्रशासन तंत्र था। सम्पूर्ण प्रशासन सदिष्णता तथा लोक कल्याण की भावना से प्रेरित था अकबर ने एक आदर्श शासन व्यवस्था को स्थापित करके साम्राज्य की नीवं मजबूत की। यदि वह एक सी प्रशासनिक एकता न स्थापित करता तो इतने विशाल राज्य क्षेत्र पर, जिसमें विभिन्न प्रकार की जातियाँ निवास करती हैं, शासन स्थापित न कर पाता और ना ही शान्ति स्थापित करने में आदितीय सफलता प्राप्त कर पाता। अकबर के प्रयासों का एक ही परिणाम था कि प्रशासनिक दृष्टि से प्रजा तथा राज्य दोनों ही सुखी थे तथा समृद्ध थे, प्रजा में एकता और राज्य के प्रति अकबर के आदर में बढ़ोतरी हुयी, उसने जिस नवीन व उदार दृष्टिकोणो को जन्म दिया उस में सर्वप्रमुख हिंदू व मुसलमानों को निकट लाने का कार्य किया वह इस दिशा में उसका प्रथम पूर्णता सफल रहा।

धार्मिक एकता

अकबर ने अपने साम्राज्य को धार्मिक रूप से भी एक करने का प्रयास किया। जिस समय वह शासक बना उसके साम्राज्य में विभिन्न धर्मों व संप्रदायो के लोग थे जिनमे परस्पर वैमनस्य था अकबर ने न केवल स्वमं धर्म–सहिष्णुता का पालन किया बल्कि जनता में भी इसी प्रकार के विचारों को जागृत करने का प्रयास किया। उसने जनता को एक धार्मिक सूत्र में बांधने के लिए 'दीन ए इलाही' नायक एक नवीन धर्म चलाया इस धर्म में उसने प्रत्येक धर्म की अच्छी–अच्छी बातों का संग्रह किया, विभिन्न धर्मों की कटुता को अंत किया ये कार्य उसकी राष्ट्रीयता व उदारता का परिचय देती है वह देश में एक जैसी संस्कृति उत्पन्न करके जनता में राष्ट्रीयता लाना चाहता था। वह लोगों से सुलह–कुल की नीति का अनुसरण कराके हिन्दु व मुसलमानों के मध्य की खाई को खत्म करना चाहता था। अकबर के शासन काल में सभी धर्मावलम्बी अपनी पूजा, उत्साह आदि करने के लिए स्वतंत्र ही न थे अपितु बादशाह स्वयं होली, दीपावली, बसन्त आदि जैसे महत्वपूर्ण पर्वो में स्वयं भी उत्साह से भाग लेता था। निश्चय ही अकबर की सहिष्णु धार्मिक नीति मुगल शासकों की नीति को एक नवीन मोड देने में पूर्णतः सफल सिद्ध हुयी।

समाजिक एकता

अकबर द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक कार्य निश्चय ही उसकी सामाजिक एकता को दृष्टिगोचर करती है। हम कह सकते हैं कि राजनीतिक समानता द्वारा और धार्मिक भेद–भाव समाप्त हो जाने से सामाजिक एकता का मार्ग–प्रशस्त होता है। अकबर के शासनकाल में पहली बार एक ऐसी भारतीय सामाजिक संस्कृति का निर्माण हुआ जिससे हिन्दु तथा मुस्लिम आदर्शों का समन्वय हुआ। मुगल दरबार में नौरोज का पारसी पर्व ईद शबेरात आदि मुस्लिम पर्व तथा दीपावली व होली आदि हिंदू पर्व मनाए जाते थे। उसने गौवध, सती– प्रथा, कन्या–वध जैसी कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयत्न किया, बाल–विवाह बंद कराया। जजिया–कर व तीर्थ यात्रा कर समाप्त कर दिया। अकबर ने हिंदुओं व मुसलमानों के सामाजिक आदर्शों को निकट लाकर सामाजिक एकता स्थापित करने का सफल प्रयास किया जिसे हिंदू व मुसलमानों में परस्पर वैमनस्य व घृणा की भावनाए धीरे–धीरे कम होने लगी व सामाजिक दृष्टि से सभी वर्ग निकट आ गये।

आर्थिक एकता

अब तक एक इस्लामी राज्य में आर्थिक आधार पर ही भेदभाव किया जाता था। हिंदुओं पर जजिया, तीर्थ कर आदि समाप्त करके अकबर ने कर प्रणाली को समानता के आधार पर गठित किया। अब शासकीय सेवाओं के आर्थिक लाभ हिंदुओं को भी प्राप्त हुये अकबर का उद्देश्य राज्य स्थापित करना था जिससे प्रजा के सभी वर्गों की आर्थिक समृद्धि हो सके उसने भू–राजस्व प्रणाली को पुर्नगठित किया जिसका लाभ कृषको को प्राप्त हुआ जो कि अधिकांश हिंदू थे। अकबर ने राज्य की ओर से आर्थिक सहायता देने में भी समानता का दृष्टिकोण अपनाया और राज्य की आर्थिक सहायता सभी वर्गों को प्रदान की। सभी वर्गों को धनोपार्जन एवं व्यपार करने की स्वतंत्रता प्रदान की। निश्चय ही इन आधारों पर हमें अकबर के काल में साम्राज्य का राष्ट्रीय स्वरूप स्थापित होता दिखता है।

सांस्कृतिक एकता

अकबर के प्रयासों से सांस्कृतिक एकता भी स्थापित हुए उसने हिंदू मुस्लिम संस्कृतियों को एक दूसरे के निकट ला दिया। साहित्य की दृष्टि से देखें तो यद्यपि राष्ट्रभाषा फारसी थी पर फिर भी प्रत्येक भाषा में साहित्य अकबर के काल में लिखा गया। अनेक धार्मिक ग्रंथों को अलग–अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया। अनेक फारसी ग्रंथों का हिंदी में वह हिंदी ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद हुआ जिससे हिंदू मुसलमानों को एक दूसरे की संस्कृति को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। कला के क्षेत्र में जो भी निर्माण कार्य हुआ उसमें हिंदी व अर्बी का समिश्रण था हिंदुओ ने अपने भवन निर्माण कला में मुसलमानों से सीखा तथा मुसलमानो ने भी भारतीय शैली को अपनाया इसलिए अकबर के काल की भवन निर्माण में भारतीय व मुसलमानों की मिश्रित कला शैली का प्रयोग किया गया। अकबर ने संगीत को भी प्रोत्साहन दिया उसके दरबार में हिंदू तथा मुसलमान दोनों प्रकार के संगीतज्ञ थे। संगीत शास्त्र में नये ढ़ंग आये। हिंदू त्योहारों को अपनाया, खानपान तथा वेशभूषा को भी पसंद किया जो ये स्पष्ट करता है कि अकबर हिन्दुओं के कितने निकट आकर एक राष्ट्रीय रूप स्थापित कर रहा था।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वह एक राष्ट्रीय सम्राट था। उसकी नीति, भावना और प्रयत्नों के कारण मध्य युग के शासकों में वह अकेले ही एक ऐसा शासक था जिसे राष्ट्रीय शासक का सम्मान प्रदान किया गया। उसने हिंदू व मुसलमानों को एक राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित किया। दोनों जातियों को समान अधिकार प्रदान कर राष्ट्रीयता के सूत्र में पिरोया। अकबर की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक एकीकरण तथा समन्वय की नीतियों के कारण राष्ट्रीय सम्राट कहना युक्ति संगत है उसके राज्य में सभी वर्गों को समानता, धार्मिक तथा स्वतंत्रता, सम्मान प्राप्त था और किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था। अकबर सभी वर्गों का सम्राट था और सभी वर्गों को समृद्ध तथा सुखी बनाना उसका उद्देश्य था विभिन्न वर्गों को निकट लाकर एक राष्ट्र के निर्माण का महान कार्य उसने प्रारंभ किया। मेलिसन का यह कथन पूर्णतः तर्क संगत प्रतीत होता है कि यदि हम इस बात पर विचार करते हैं कि उसने क्या किया, किस युग में किया, तो हम इस बात को स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि सम्राट उन महान विभूतियों में से था जिन्हें परमात्मा राष्ट्रीय आपत्ती के समय शांति व सुत्यवस्था के मार्ग पर चलने के लिए भेजता है, जिससे लाखों लोगों को सुख मिल सके अकबर के राष्ट्रीय दृष्टिकोण की प्रशंसा करते हुए इतिहासकारों ने कहा है कि अकबर की महानता इस कारण है कि वह पूर्णतः भारतीय हो गया था। उसकी प्रतिभा ने हिंदू तथा मुसलमान दो जातियों को इस विशाल सेवा कर नागरिकता के बंधनों द्वारा एक राष्ट्र के रूप में प्रेरित करने की संभावना का अनुभव कर लिया था और अकबर ने उत्साह से यह कार्य संपादित भी किया।

सन्दर्भ

1. गुप्त, डा0 मानिक लाल. मध्यकालीन भारत का इतिहास. पृष्ठ **21–23.**
2. महाजन, डॉ0वी0डी0. मध्यकालीन भारत. पृष्ठ **69–71.**
3. वर्मा, डॉ0एस0आर0. मध्यकालीन भारत का इतिहास (1200 से 1761 ई0 तक). पृष्ठ **81–83.**

4. मित्तल, डा0ए0के0. मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1206 ई0 से 1764 ई0 तक). पृष्ठ **269–271.**
5. बिनयोन, एल. (1932). अकबर.
6. त्रिपाठी, आर0पी0. (1964). सम अस्पेक्टस आफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेसन. प्रकाशित सेन्ट्रल बुकड़ियो. जनवरी.
7. लिसन, जी0बी0मे0. (1890). अकबर.
8. स्मिथ, बी0 ए0. (1919). मुगल अकबर द ग्रेट.
9. फजल, अबुल. आइने अकबरी (3 टवस) (ट्रान्सलेगीड इनटू ब्लोचमेन (टवस सस एड टवस ससस) जेरिट द्वारा.
10. फजल, अबुल. अकबरनामा उण्ण (ट्रान्स्लेटिड इन्ट् अंग्रेजी, हिन्दी).